

(c) Yes, on suitable schemes if such schemes are received.

Goods Train Derailment

939. **Shri Raghunath Singh:** Will the Minister of Railways be pleased to state:

(a) whether it is a fact that thirteen wagons of a goods train were derailed between Bhatapara and Nipania near Raipur at 3 p.m. on the 29th August, 1955; and

(b) if so, the cause of the derailment?

The Deputy Minister of Railways and Transport (Shri Alagesan): (a) At about 14.20 hours on 29-8-1955, while No. 773 Up Goods train was running between Nipania and Bhatapara stations on the Howrah-Nagpur Section of the South Eastern Railway, 13 wagons on the train 33rd to 45th from the engine, derailed.

(b) A joint Enquiry has been held by a Committee of Railway Officers and their report is awaited.

Technical Assistants

940. **Shri P. L. Kureel:** Will the Minister of Communications be pleased to state:

(a) the total number of candidates who were interviewed recently for the post of Technical Assistants (Grade II) in the Wireless Planning and Co-ordination Branch of this Ministry, and

(b) how many of them were appointed?

(The Deputy Minister of Communications (Shri Raj Bahadur): (a) and (b) Forty candidates were interviewed and action for appointing the selected candidates is in hand.

पशुओं का परिवहन

९४१. **बाबू राम नारायण सिंह :** क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि हावड़ा, बम्बई और मद्रास से भेजी जाने वाली गायों और भैंसों पर रेल किराये में १९४४, १९४५, १९४६ और १९५२, १९५३, १९५४ में रेलवे विभाग द्वारा दी गयी रियायतों का खोरा क्या है ?

रेलवे तथा परिवहन उपमंत्री (श्री अलगेसान) : १९४४, १९४५, १९४६, और १९५२ में हावड़ा, बम्बई और मद्रास से जो गायें और भैंसें बुक की गयीं उनके रेल-भाड़े में कोई रियायत नहीं दी गयी। बम्बई, हावड़ा और मद्रास से दूध न देने वाले जानवरों और उनके बछड़ों को चराने के उद्देश्य से देश के उत्तरी भाग के स्टेशनों तक भेजने के लिए १-३-१९५५ से भाड़े का एक रियायती दर जारी की गयी। इसके अनुसार चार पहिये वाले एक डिब्बे का प्रतिमील चार आने छे पाई भाड़ा लिया जाता है जबकि बड़ी लाइन में इस तरह के डिब्बे का भाड़ा प्रति मील सात आने और मीटर लाइन में छठ आने है। जानवर भेजने वालों की जिम्मेदारी पर बुक किये जाते हैं और उन्हें इन पर पूरी चूंगी भी देनी पड़ती है। अभी यह दर फरवरी १९५६ के अन्त तक लागू रहेगी।